"अधूरी आस"

• नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ ।
ओइ जीवदें विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ।1।

अर्थः- हे नानक ! माया के आसरे प्रीति डालने वालों की प्रीति का बँधन पक्का नहीं होता । सो उनसे प्रीति तोड़ ले जिनकी प्रीति कच्ची है उन्हें सदा निभने वाला साथी ना समझ । गुरमुखों की संत - जनों की तलाश कर उनकी प्रीति पक्की होती है क्योंकि उनका कोई स्वार्थ नहीं होता । स्वार्थी तो जीते - जी ही दिल से विछड़े रहते हैं । पर गुरमुख सत्संगी मरने पर भी साथ नहीं छोड़ते प्रभु प्यार की दात के लिए अरदास करते हैं ।

नानक बिजुलिआ चमकनि धुरन्हि घटा अति कालीआ। बरसनि मेघ अपार नानक संगम पिरी सुहंदीआ ।2।

अर्थः- हे नानक ! सावन की ऋतु में जब बादलों की घनघोर काली घटाएं गरजती हैं । उनमें बिजलिया चमकती हैं । और बादल मूसलाधार बरसते हैं तब कैसा सुहावना समय होता है पर ये काली घटाएं स्त्रियों को पति के मिलाप में ही सुहावनी लगती हैं ।

जल थल नीरि भरे सीतल पवण झुलारदे । सेजड़ीआ सोइंन हीरे लाल जड़ंदीआ । सुभर कपड़ भोग नानक पिरी विहूणी ततीआ ।3। पउड़ी।

अर्थः- हे नानक ! जेठ - आसाढ़ की तपती लू के बाद बरखा ऋतु में नदियाँ और मैदान बरसात के पानी से भरे हुए हों, ठंडी हवाएं बहती हों, सोने का पलंग हो जिसमें हीरे और लाल जड़े हुए हों । शगनों के दुशाले पहने हुए हों पर अगर स्त्री का अपने पति से विछोड़ा है तो ये सारे सुहावने पदार्थ हृदय को सुख पहुँचाने की जगह तपश पैदा करते हैं ।

• कारण करते जो कीआ सोई है करणा । जे सउ धावहि प्राणीआ पावहि धुरि लहणा। बिन करमा किछ न लभई जे फिरहि सभ धरणा।

अर्थः- हे प्राणी ! जो सबब करतार ने बनाया है वही बनना है । अगर तू सैंकड़े बार दौड़ता फिरे जो धुर से तेरे किए कर्मों के अनुसार लेना लिखा है वही प्राप्त करेगा सारी धरती पर भी अगर भटकता फिरे तो भी प्रभु की मेहर के बिना कुछ नहीं मिलेगा इस वास्ते उसकी मेहर का पात्र बन ।

गुर मिलि भउ गोविंद का भै डर दूरि करणा । भै ते बैराग ऊपजै हरि खोजत फिरणा। खोजत खोजत सहज उपजिआ फिरि जनमि न मरणा।

अर्थः- जिस मनुष्य ने गुरू को मिल के परमात्मा का डर हृदय में बसाया है । प्रभु ने उसका दुनियावी डरों का सहम दूर कर दिया है । परमात्मा के डर से ही दुनिया की तरफ से वैराग पैदा होता है मनुष्य प्रभु की खोज में लग जाता है । परमात्मा की खोज करते-करते (मनुष्य के अंदर) आत्मिक अडोलता पैदा हो जाती है। और उसका जनम-मरण का चक्कर समाप्त हो जाता है।

हिआइ कमाइ धिआइआ पाइआ साध सरणा । बोहिथ नानक देउ गुर जिस हरि चड़ाए तिस भउजल तरणा ।

अर्थः- जिसको गुरू की शरण प्राप्त हो गई उसने हृदय में नाम सिमरा । नाम की कमाई की हे प्राणी ! गुरू नानक देव आत्मिक जहाज है । हरी ने इस जहाज में जिसको बैठा दिया उसने संसार - समुंद्र को पार कर लिया ।

• पहिला मरण कबूल जीवण की छडि आस । होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ।1। मुआ जीवदां पेख जीवदें मरि जानि । जिना मुहबति इक सिउ ते माणस परधान।2। मठ-5।

अर्थः- पहले अहंकार ममता का त्याग परवान करे और स्वार्थ - भरी जिंदगी की तमन्ना छोड़ दे । परमात्मा की तरफ से संदेशा है हे बँदे ! तब ही तू मेरे नजदीक आ सकता है । असल में उसी व्यक्ति को जीवित समझो जिसने सांसारिक वासनाएं मिटा ली हैं । जो निरे दुनियां के रंग भोगते हैं वे आत्मिक मौत मर जाते हैं । वही मनुष्य शिरोमणि कहे जाते हैं जिनका प्यार एक परमात्मा से है ।

• जिस मनि वसै पारब्रहम निकटि न आवै पीर । भुख तिख तिस न विआपई जम नही आवै नीर ।3। पउड़ी ।

अर्थः- जिस मनुष्य के मन में सदा परमात्मा का नाम बसता है । कोई दुख - कलेश उसके नजदीक नहीं आता । माया की भूख - प्यास उस पर अपना दबाव नहीं डाल सकती । मौत का डर भी उसके नजदीक नहीं आता ।

कीमति कहत न जाईऐ सच साह अडोले । सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउण तुध नो तोले ।

अर्थः- हे सदा - स्थिर और कभी ना डोलने वाले शाह ! तेरा मूल्य नहीं आँका जा सकता जोग - साधना में सिद्ध - हस्त योगी साधना करने वाले साधक ज्ञान - चर्चा करने वाले इनमें से कौन है जो तेरा मूल्य आँक सके ।

भंनण धड़ल समरथ है ओपति सभ परले । करण कारण समरथ है घटि घटि सभ बोले ।

अर्थः- हे भाई ! प्रभु सृष्टि को पैदा करने और नाश करने में समर्थ है । सृष्टि की उत्पत्ति भी वही करता है और नाश भी वही जगत पैदा करने की ताकत रखता है हरेक जीव के अंदर वही बोलता है ।

रिजक समाहे सभसै किआ माणस डोले । गहिर गभीर अथाह तू गुण गिआन अमोले ।

अर्थः- हरेक जीव को रिज़क पहुँचाता है मनुष्य व्यर्थ ही घबराता है । हे प्रभु ! तू गहरा है समझदार है तेरी थाह नहीं लगाई जा सकती । तेरे गुणों का मूल्य नहीं आँका जा सकता तेरे ज्ञान का मूल्य नहीं पड़ सकता ।

सोई कंम कमावणा कीआ धुरि मउले । तुधहु बाहर किछ नही नानक गुण बोले । (5-1102)

अर्थः- हे भाई ! जीव वही काम करता है जो धुर से करतार ने उसके वास्ते मिथ दिया है भाव उसके किए कर्मों के अनुसार ही जिस तरह

के संस्कार जीव के अंदर डाल दिए हैं । हे प्रभु ! तुझसे आकी हो के जगत में कुछ नहीं घटित हो रहा । नानक तेरी ही सिफत - सालाह करता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"